‘स्त्री’ और ‘पुरुष’ मस्तिष्क जैसा कुछ नहीं होता

आम तौर हम सुनते आए हैं कि पुरुष और महिला के दिमाग ही अलग-अलग होते हैं। जहां पुरुष गणित और तर्क में तेज़ होते हैं तो महिलाएं भावनाओं और कई कामों को एक साथ संभालने में। और यह कहा जाता है कि ये अंतर उनके मस्तिष्क की रचना में निहित हैं। मगर हाल ही में किए गए एक व्यापक अध्ययन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ‘स्त्री’ मस्तिष्क और ‘पुरुष’ मस्तिष्क जैसा विभाजन बेमानी है।

इस अध्ययन की मुखिया इस्राइल के तेल अवीव विश्वविद्यालय की डेफ्ना जील बताती हैं कि सामाजिक जेंडर भेद को शारीरिक रचनाओं पर आरोपित करने को लेकर वे चिंतित रही हैं।

बताया जाता है कि जब भ्रूणावस्था में वृषण का विकास होता है और वे टेस्टोस्टेरोन नामक हारमोन बनाने लगते हैं तो वह हारमोन दिमाग का मर्दानाकरण कर देता है। इसका मतलब हुआ कि दिमाग दो तरह के होते हैं।

इसी सिद्धांत को जांचने के लिए जील व उनके साथियों ने 13-85 वर्ष उम्र के 1400 लोगों के मस्तिष्क स्कैन पर गौर किया। उन्होंने मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों की साइज़ और उनके आपसी जुड़ाव को देखा। कुल मिलाकर टीम को मस्तिष्क के 29 ऐसे क्षेत्र मिले जिनकी साइज़ में आम तौर पर स्त्री-पुरुष के अनुसार अंतर पाए गए। मगर जब एक-एक मस्तिष्क को देखा गया, तो ऐसे लोग बहुत कम थे जिनमें उनके लिंग के अनुसार मस्तिष्क के सारे गुणधर्म पाए जाएं। पूरे समूह में 0-8 प्रतिशत लोग ही ऐसे थे जिनमें ‘पूर्ण स्त्री’ या ‘पूर्ण पुरुष’ मस्तिष्क थे। शेष सारे लोगों के मस्तिष्क इनके बीच कहीं थे।

इसका मतलब यह होता है कि यदि बड़ी संख्या में व्यक्तियों को देखा जाए तो औसतन आप कह सकते हैं कि मस्तिष्क की संरचना में लिंग के अनुसार फर्क होते हैं मगर व्यक्ति के स्तर पर तो हर व्यक्ति का मस्तिष्क अनूठा होता है; वह न तो स्त्री का मस्तिष्क होता है न पुरुष का। यह सही है कि जील की टीम ने सिर्फ मस्तिष्क की रचनाओं का अध्ययन किया है, उनके कार्यों का नहीं मगर इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि हम सब एक बड़ी रेंज पर विभिन्न स्थानों पर हैं। लिंग की दृष्टि से मस्तिष्क की रचना में कोई स्पष्ट विभाजन नहीं किया जा सकता।

हो सकता है ये निष्कर्ष कई लोगों को आश्चर्यजनक लगें मगर यूके के ओपन विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक मोग जॉन बार्कर का कहना है कि इस अध्ययन से उसी बात की पुष्टि होती है जो हमें बरसों से पता है। लड़के-लड़कियों के बीच जो अंतर नज़र आते हैं वे दिमाग की भौतिक रचना के परिणाम नहीं हैं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक परवरिश के नतीजे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***